सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संधान

राजभाषा हिन्दी को समर्पित पत्रिका

पंचम अंक (जुलाई 2021-दिसम्बर 2022)

"ऑडिट भवन" लखनऊ स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं
लेखा विभाग के कार्यालयों का संयुक्त प्रयास

"ऑडिट भवन" परिसर लखनऊ
स्थित कार्यालयों से सम्बद्ध शाखाओं के कार्य-स्थल

ऑडिट भवन,
लखनऊ

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
झारखण्ड, राँची

कार्यालय महालेखाकार
बिहार, पटना

सत्यनिष्ठा भवन
कार्यालय महालेखाकार, प्रयागराज

संधान परिवार

प्रकाशन
विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका
'संधान' (अर्धवार्षिक)

प्रकाशक
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

अंक
पंचम अंक
(जुलाई 2021-दिसम्बर 2022)
(संयुक्तांक)

मूल्य
राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा
एवं सम्मान

मुख्य संरक्षक (पदेन - वरिष्ठता के आधार पर)
श्री संजय कुमार
प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती तान्या सिंह
महालेखाकार (लेखा परीक्षा II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ

प्रधान संपादक (पदेन - निदेशक, प्रशासन, लखनऊ)
श्री डेनीस डेनीयल
उप-निदेशक, प्रशासन/अप्रत्यक्ष कर,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
लखनऊ

कार्यकारी संपादक
ई.ए.पी.एस. शास्त्री, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल
श्री अतुलेश रंजन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती लीना दरियाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री कैलाश नाथ मिश्रा, वरिष्ठ लेखाकार

संधान का अर्थ - "लक्ष्य भेदन हेतु धनुष पर बाण चढ़ाना" अथवा "लक्ष्य भेदन हेतु निशाना लगाना" है विभागीय पत्रिका का ये नाम हमारे विभाग के मुख्य कर्तव्य/लक्ष्य/उद्देश्य अर्थात किसी तंत्र (सिस्टम) की कमियों का अनुसंधान करना/उनको इंगित करना, के अनुरूप भी है। इसी विचार के साथ सम्पादक मण्डल ने पत्रिका हेतु इस नाम पर अपनी सहमति प्रदान की ।

आवरण चित्र - विभूतिखंड, गोमतीनगर स्थित "ऑडिट भवन" लखनऊ

"ऑडिट भवन" लखनऊ स्थित कार्यालयों का विवरण

कार्यालय	अधीनस्थ शाखा कार्यालय	कार्य-क्षेत्र
प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ	अप्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय- लखनऊ	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय सरकार) की लेखापरीक्षा
	प्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय- प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) की लेखापरीक्षा
	केंद्रीय व्यय शाखा कार्यालय- प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- पटना (बिहार)	बिहार राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- राँची (झारखंड)	झारखंड राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) उत्तर प्रदेश, लखनऊ	पुनर्गठन के पश्चात कार्यालय को चार समूहों में विभक्त किया गया है, ए.एम.जी.- I, II, III एवं IV	ए.एम.जी.-I, II एवं III जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों एवं उनके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा स्वायत्त निकायों की लेखापरीक्षा तथा उत्तर प्रदेश सरकार की राजस्व प्राप्तियों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- प्रयागराज	ए.एम.जी.-IV जिसके द्वारा लोक निर्माण विभाग, वन विभाग तथा इसके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की लेखापरीक्षा
निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ (शाखा कार्यालय)	इसका मुख्य कार्यालय महानिदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, नई दिल्ली है	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में स्थित मुख्यतः डाक एवं दूरसंचार विभाग के राजस्व एवं प्राप्तियों, एन.आई.सी. व यू.आई.डी.ए.आई. के लेखाओं की लेखापरीक्षा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, लखनऊ (शाखा कार्यालय)	इसका मुख्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, प्रयागराज है	लेखा निर्माण के लेखाओं का संकलन और विशेष मुद्रा प्राधिकार-पत्र को निर्गत करने का एवं सम्बन्धित कार्य

अस्वीकरण (डिसक्लेमर)

इस अंक में लेखकों/रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों एवं लेखन की मौलिकता संबंधी जिम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है। रचना/आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार सम्पादक मण्डल में निहित होंगे।

अनुक्रमणिका

शीर्षक	रचनाकार/लेखक (श्री/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
• शुभकामना संदेश		
चारधाम सिद्धेश्वर मंदिर- नामची	दीपिका पाण्डे	1
मेरी प्रथम दक्षिण भारत यात्रा एक सुखद अनुभूति	प्रभाकर दुबे	2
अगस्त क्रांति में बैरिया (जिला बलिया) का योगदान	शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय	4
बाल-बाल बचे	संजीव कुमार श्रीवास्तव	5
बाबू वीर कुँवर सिंह	राम जनम राय	6
योग एक जीवन पद्धति	संजीव चटर्जी	8
लेखापरीक्षा-धर्म	आशुतोष कुमार श्रीवास्तव	9
संवाद-सम्प्रेषण प्रवीणता और नजरिया	बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	10
ग़ज़ल	लीना दरियाल 'सत्यम'	11
मैया	जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय)	12
कर्म और किरदार	बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	12
उगते सूरज की प्रथम किरण	शुभम आनन्द रस्तोगी	13
अदालत भी तुम्हारी है	शुभम आनन्द रस्तोगी	13
एक जीवन जिया	अर्शिका वर्मा, सुपुत्री श्रीमती रचना वर्मा	14
हिंदी मेरी भाषा है	समृद्धि कनोडिया, सुपुत्री श्री प्रवीन कनोडिया	14
वाह री परीक्षा	श्रीमती पुष्पा	15
कविता	जान्हवी वर्मा, भांजी सुश्री छाया रानी श्रीवास्तव	15
इतराता हूँ	रामौतार	16
अनमोल-रिश्ते	राजेश कुमार-1	17
बदली सी	राजेश कुमार-1	17

खामोशी	सुमन केशरी	18
मन की बात	डॉ. आकांक्षा उपाध्याय, पत्नी अभिषेक उपाध्याय	18
जाने कुछ शार्ट-कट्स [Let's have some Keys]	अभिषेक उपाध्याय	19
ग्लोबलवार्मिंगः मानव जीवन के लिए चुनौती	योगेन्द्र नारायण बाजपेयी	20

- सेवानिवृत्तियां/पदोन्नति - जुलाई 2021 से दिसंबर 2022 के मध्य 21
- संधान चतुर्थ अंक के विमोचन की झलकियाँ (03.01.2022) 22-23
- 15 अगस्त 2022 की कुछ झलकियाँ 24-27
- उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (रिपोर्ट केन्द्रीय) श्री राकेश मोहन के लखनऊ आगमन की झलकियाँ 28
- ऑडिट सप्ताह 17.11.2022 - 23.11.2022 के अवसर की झलकियाँ 29-35
- श्रद्धा सुमन 36

विशेष सूचनाः संधान परिवार के सभी सदस्य संज्ञान लें कि इंटरनेट से 'कॉपी-पेस्ट' किया गया, किसी अन्य लेखक का कोई लेख/कविता स्वीकार्य नहीं होगी। कृपया स्वयं की रचनाधर्मिता एवं लेखन क्षमता को अवसर प्रदान करें। इंटरनेट से प्रमाणिक तथ्य एवं आँकड़े लिये जा सकते है।

सुझाव/प्रतिक्रिया आमंत्रण

ये हमारे लिए हर्ष का विषय है कि ''संधान'' का पंचम अंक आपके समक्ष है। आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस अंक के बारे में अपनी मूल्यवान प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य भेजें। आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझाव हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं जो इस पत्रिका को और अधिक रुचिकर एवं जानकारी पूर्ण बनाने में सहयोगी सिद्ध होंगे।

पता : वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन), कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ, तृतीय तल, 'ऑडिट भवन', टी.सी.-35-वी-1, विभूतिखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

ई-मेल : sao-admn.luk.cca@cag.gov.in

सूचनाः संधान परिवार के सभी सुधी सदस्यों को विदित है कि समाज में समरसता, सौहार्द एवं देश प्रेम को बढ़ावा देने हेतु, इस पत्रिका में भारत के महापुरुषों/संतों एवं उनकी शिक्षा पर आधारित एक श्रृंखला प्रकाशित की जा रही है। अतः आप सभी से अनुरोध है कि इस संदर्भ में आगामी अंकों के लिए आप अपने लेख के माध्यम से योगदान दें।

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
लखनऊ

संजय कुमार
प्रधान निदेशक
मुख्य संरक्षक
संधान पत्रिका

मुख्य संरक्षक के आशीर्वचन

हमारे कार्यालय परिसर 'ऑडिट भवन' में स्थित सभी कार्यालयों एवं उनसे सम्बद्ध शाखा कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से राजभाषा हिंदी की विभागीय पत्रिका **'संधान'** के पंचम अंक के प्रकाशन के अवसर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

हिंदी पत्रिका राजभाषा के प्रचार प्रसार का सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा मौलिक हिंदी लेखन को प्रोत्साहन मिलता है। संधान पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है।

पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य केवल राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार को प्रोत्साहन देना ही नहीं अपितु साहित्यिक सृजनशील कार्मिको को उनकी रचनाओं की प्रस्तुति को उपयुक्त मंच प्रदान करना है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु सभी योगदानकर्ता एवं संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई एवं प्रशंसा के पात्र हैं। आशा है की इसमें समाविष्ट समस्त रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय होंगी।

संधान हिंदी प्रयोग एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहन देने के अपने उद्देश्यों को पूर्ण करती हुई अपने पथ पर अग्रसर है। मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। संधान की आगामी यात्रा की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

संजय कुमार

(संजय कुमार)
प्रधान निदेशक
मुख्य संरक्षक संधान पत्रिका

तान्या सिंह
महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

सत्यमेव जयते

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा–II)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संरक्षक के आशीर्वचन

हिंदी राजभाषा की विभागीय पत्रिका संधान के पंचम अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। कार्यालय हिंदी पत्रिका राजभाषा में विशेष रूचि रखने वाले सभी कार्मिको को राजभाषा हिंदी में उनके कौशल की प्रस्तुति करने का सर्वोत्तम साधन है, साथ ही कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में आयोजित होने वाली अन्य गतिविधियों की झलक भी मिलती है।

संधान हिंदी प्रयोग एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहन देने के अपने उद्देश्यों को पूर्ण करती हुई अपने पथ पर अग्रसर है। इस पत्रिका के कुशल संपादन व सहयोग हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। 'संधान' पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

तान्या सिंह

(तान्या सिंह)
महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

डेनीस डेनियल
उप निदेशक
प्रधान संपादक

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ

संदेश

संधान का पंचम अंक आपके समक्ष है। राजभाषा की विभागीय पत्रिका का प्रकाशन एक अद्‍भुत आनंद की अनुभूति देता है। अपरिहार्य कारणों से प्रकाशन में हुई देरी के लिए हमें खेद है एवं भविष्य में समय पर अंक के प्रस्तुति की हमारी पुरजोर कोशिश रहेगी। संधान परिवार आपके सहयोग एवं प्रेम का सदैव आकांक्षी है।

सभी रचनाकर एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

(डेनीस डेनियल)
उप निदेशक
प्रधान संपादक

ई ए पी एस शास्त्री
कार्यकारी संपादक

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ

संपादक की कलम से...

संधान का पंचम अंक प्रस्तुत है। अपरिहार्य कारणों से प्रस्तुति में विलम्ब हो गया है तथापि इस अंक के स्तंभकारों, रचनाकारों को बधाई एवं धन्यवाद्।

संधान आपके अन्दर की रचनात्मकता को जगाने एवं उसको एक मंच देने की हमारी कोशिश है। विनम्र आग्रह है कि संधान के प्रति अपना सहयोग एवं प्रेम बनाये रखें तथा आशा है कि भविष्य में और अधिक रचनाएँ प्राप्त होंगी।

धन्यवाद

(ई ए पी एस शास्त्री)
कार्यकारी संपादक

चारधाम सिद्धेश्वर मंदिर- नामची

दीपिका पाण्डे
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान निदेशक,
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ
शाखा प्रयागराज

हमने अभी तक धरती पर सिर्फ एक ही स्वर्ग सुना था जिसे देखने की इच्छा होते हुए भी कभी ऐसी जगह जाने का मन नहीं बना पाए जहां फूलों की भीनी खुशबू पक्षियों की चहचहाहट से ज्यादा बारूद की महक और धमाकों का शोर हो।

प्रभु कृपा से और सौभाग्य से मुझे एक अन्य मनोरम तीर्थ स्थल जाने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसका नाम है 'नामची'

नामची का शाब्दिक अर्थ स्थानीय भूटिया भाषा में शीर्ष आकाश। दक्षिण सिक्किम में जलपाईगुड़ी से 100 किमी की दूरी पर 5,500 फिट की ऊँचाई पर सोलोफोक पहाड़ी पर स्थित है चारधाम सिद्धेश्वर मंदिर, यहाँ भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों की प्रतिकृति निर्मित है, जिसमें भारत के चारों कोनों में स्थित चार धाम एवं संपूर्ण भारत में स्थित 12 ज्योर्तिलिंग शामिल हैं।

भारतीय धर्मग्रंथों के अनुसार बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथपुरी और रामेश्वरम इन चार धामों में श्री विष्णु भगवान या उनके स्वरूप को पूजा जाता है। सनातन धर्म के अनुसार, शिव जी बारह स्थानों पर स्वयं प्रगट हुए तथा उन्हें उन बारह स्थानों पर स्थित ज्योर्तिलिंग के रूप में पूजा जाता है।

सिद्धेश्वर धाम तक की यात्रा का मार्ग बहुत ही नयनाभिराम है। दूर-दूर तक सिर्फ हरियाली और बहुत से नए नवेले सुन्दर पुष्पों के गुच्छे जैसे आपके आगमन पर झुक कर आपका स्वागत कर रहे हों। विशाल प्रांगण के प्रवेश द्वार पर धनुष धारण किए किरतेश्वर की मूर्ति है, इनको सिक्किम में शिव का स्थानीय अवतार रूप माना जाता है। एक किंवदंती के अनुसार शिव जी ने, अर्जुन की कड़ी तपस्या से प्रसन्न होकर इसी नामची की सोलोफोक पहाड़ी पर अवतरित होकर पशुपति अस्त्र का वरदान दिया था।

नामची के सिद्धेश्वर धाम के नाम से जाने वाले इस स्थल के शिखर पर भगवान शिव की 90 फिट ऊँची विशालकाय प्रतिमा है जिसके सम्मुख नन्दी महाराज विराजमान हैं।

मंदिर में बाईं तरफ से घूमने की परंपरा है ताकि पूरे प्रांगण में परंपरागत दक्षिणावर्त घूमा जा सके।

प्रथम धाम – रामेश्वरम मंदिर, इसकी प्रतिकृति अपने मूलरूप को पूर्ण रूपेण प्रदर्शित करता है, जहाँ शिवलिंग की स्थापना प्रभु राम ने लंका प्रस्थान के समय की थी।

द्वितीय धाम – सोमनाथ मंदिर, इसमें भारत के पश्चिमी तट पर द्वारकाधीश की प्रतिकृति है।

तृतीय धाम – जगन्नाथ मंदिर, यहाँ कृष्ण बलराम और सुभद्रा की मूर्तियाँ मूल जगन्नाथपुरी की मूर्तियों को दर्शाती हैं।

चतुर्थ धाम – श्री बद्रीनाथ धाम, यह मंदिर भी पूर्ण रूप से अपने मूलरूप को दर्शाता है।

12 ज्योर्तिलिंगों की विधिवत भोर और संध्या में पूजा अर्चना और आरती होती है।

सिद्धेश्वर धाम के लिए कहा जाता है कि यहाँ की यात्रा करना संपूर्ण तीर्थ स्थलों की एक साथ यात्रा का फल प्राप्त होने जैसा ही है।

एक ही प्रांगण में प्रभु के इतने रूप एक साथ और शिव जी की बहुत सौम्य मुख मंडल की प्रतिमा के तेज का प्रभाव महसूस होता है, शुद्ध खुली पवन और पक्षियों के कलरव के बीच शांति आपको बांधती है। विशुद्ध शिव के रंग में रंगा नील गगन, गुनगुनी धूप, प्रतिदिन ठंडी बूंदों की फुहार, बादलों की सौंधी सुगंध और मन मस्तिष्क का कण-कण शांत करने वाला वातावरण आँखों को सुकून देने वाले दृश्य प्रभु का आभास कराने वाले पल स्मृति पटल में ताज़ा हैं।

क्या आप जानते हैं

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इसका कुल क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी है. संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के मुताबिक, देश में दुनिया की 18 फीसदी आबादी रहती है। भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाले लोकतंत्र के रूप में प्रसिद्ध है। भारत में पंजीकृत मतदाताओं की संख्या लगभग 94.50 करोड़ के करीब है।

मेरी प्रथम दक्षिण भारत यात्रा एक सुखद अनुभूति

प्रभाकर दुबे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान निदेशक,
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

भारत के उत्तरी प्रांत के लोगों के लिए दक्षिण के सभी प्रांत आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। इसके अनेकों कारण हैं। सांस्कृतिक रूप से साम्यता होने बावजूद खान पान, रहन सहन, भाषा एवं लोकाचार जैसे अनेकों विषय ऐसे हैं जिनमें काफी अन्तर होने के कारण एक दूसरे को जानने का कौतूहल हमेशा से दोनों पक्षों में रहा है। चूँकि भारत एक विशाल देश है अतः सम्पूर्ण भारत को आसानी से जानना समझना इतना आसान भी नहीं है और यही कारण पर्यटन की अभिलाषा को उत्साह प्रदान करता है। यूँ तो केवल पर्यटन के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा अत्यन्त आनन्ददायक होती है क्योंकि सभी कार्यक्रम योजनाबद्ध किया जा सकता है, पर किसी विशेष कार्य के लिए यात्रा के मध्य भी भ्रमण का आनन्द उठाया जा सकता है। जिसे एक पंथ दो कार्य की संज्ञा दी जा सकती है।

पुत्री को कार्यभार ग्रहण कराने एवं उसके रहने की व्यवस्था करने के लिए मुझे सपत्नीक चेन्नई जाना था जो मेरे लिए दक्षिण की प्रथम यात्रा थी। नयी जगह होने के कारण तहकीकात आवश्यक थी, जिसका सहारा मुझे भी लेना पड़ा। अपने एक सहकर्मी मित्र से चर्चा के दौरान यह पता चला कि चेन्नई न केवल अति सुरक्षित जगह है वरन पर्यटन की दृष्टि से भी आनन्ददायक है। यहाँ तक कि लगभग पचहत्तर किलोमीटर दूर स्थित 'महाबलीपुरम्' का संक्षिप्त परिचय भी मित्र महोदय द्वारा करा दिया गया जो मुझ पति-पत्नी के लिए कौतूहल का कारण बना। चूँकि मेरी प्राथमिकता बच्ची को घर दिलाना तथा उसकी व्यवस्था करना था, अतः प्रथम कार्य वही था जो पाँच दिन की यात्रा के दूसरे दिन ही कम्पनी के कुछ उत्तर भारतीय महिला कर्मियों के सहयोग से पूर्ण हो गया। अतः मेरे पास घूमने के लिए दो दिन शेष बचे, जो वहाँ के दो महत्वपूर्ण स्थान 'महाबलीपुरम्' और पाण्डिचेरी के दीदार के लिए पर्याप्त थे। खाली समय और पत्नी का साथ हो तो इंतज़ार कैसा। अतः महाबलीपुरम् और पाण्डिचेरी के भ्रमण का कार्यक्रम फटाफट तय कर लिया गया। यहाँ एक स्थान 'महाबलीपुरम्' की चर्चा करना समीचीन होगा। ''महाबलीपुरम्'' मेरे रुकने के स्थान मरई-मलाई से मात्र पच्चीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित था। यातायात सुलभ एवं सुगम था। यह समुद्र तट पर बसा एक अत्यंत रमणीक छोटा सा शहर है जो अपने प्राकृतिक सौन्दर्य और पौराणिक महत्व के कारण पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। अब प्रश्न यह था कि मरई-मलाई नगर से जाने का माध्यम क्या होना चाहिए। स्थानीय लोगों से इस सम्बंध में विचार-विमर्श आवश्यक था पर यह इतना सहज न था। मुझे तमिल नहीं आती थी और उन्हें हिन्दी। आंग्ल भाषा ही एक मात्र संप्रेषण का माध्यम था जिसमें सभी दक्ष नहीं होते। आरक्षित टैक्सी की यात्रा न केवल महंगी थी वरन मेरे हिसाब से उद्देश्यपूर्ण भी नहीं थी। कारण लोगों से मिलने-जुलने मेल-मिलाप का अवसर कम मिलता है।

तुलनात्मक रूप से बस की यात्रा सस्ती थी। यात्रा के दौरान फिजूलखर्ची पर भी नियंत्रण होना चाहिए ताकि यात्रा तनावपूर्ण न हो और सीमित साधनों से अधिक से अधिक भ्रमण किया जा सके। इस सिद्धांत का अनुसरण करते हुए बस से जाने का निर्णय बहुमत से ले लिया गया। बच्ची इसके लिए तैयार नहीं थी। उसकी इच्छा आरामदायक ढंग से भेजने की थी। बस पर बैठने पर पता चला की स्थानीय बस में महिलाओं के लिये फ्री सेवा है। फिर क्या था, मजा ही मजा था। आधे किराये में हम मात्र एक घंटे के अन्दर प्राकृतिक सुषमा से भरपुर शहर 'महाबलीपुरम्' में थे। महाबलीपुरम् पहुँच कर यह आभास हुआ कि सम्पूर्ण भारत एक सूत्र में पिरोया एक मजबूत हार के समान है जो अनेकता में एकता की उक्ति को साकार रूप प्रदान करता है। दुकानों में और निर्माण स्थल पर भगवान गणेश की काले पत्थरों से निर्मित एवं अर्धनिर्मित प्रतिभायें पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं एवं सनातन धर्म के सगुण रूप का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत कर रही थी। प्रथम पूज्य भगवान गणेश का उत्तर से दक्षिण तक सबके मन मंदिर में विराजमान होना अपने आप में अनेकता में एकता का प्रतीक है। आस्था और विश्वास में भाषा कहीं बाधक नहीं थी। काले पत्थरों पर नक्काशी दक्षिण भारतीय शिल्पकारों के शिल्पकारी का अनूठा नमूना था जिसे देख रोम-रोम पुलकित होना स्वाभाविक था। बस अड्डे से लगभग डेढ़ किलोमीटर की परिधि में बसा यह शहर अपनी प्राकृतिक सुषमा के कारण विश्वविख्यात है। समुद्र तट यहाँ के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है। हर पर्यटन स्थलों की भाँति ऑटो रिक्शा वालों का दुराग्रह एवं उनकी अनुचित मांग को नजरंदाज करते हुए हम दोनों पति-पत्नी समुद्र का दीदार करने

पैदल ही चल पड़े कारण कि समुद्र तट बस अड्डे से बहुत दूर न था। ऊँची-ऊँची लहरों की गर्जना से भरपूर समुद्र के किनारे कतार से स्थित हाट-बाजार तथा उसमें उपस्थित यात्रियों के मध्य से गुजरते हम लोग वहाँ के प्रसिद्ध शोर मंदिर पहुँच गये जो महाबलीपुरम के दर्शनीय स्थलों में से एक है।

शोर मंदिर समुद्र तट पर स्थित विशाल प्राङ्गण के मध्य में स्थित भगवान शिव का एक अत्यन्त प्राचीन मंदिर है जो शिल्प कला का अनूठा उदाहरण है। समुद्र तट पर स्थित होने के कारण समुद्र की गर्जना और दूर से उठती लहरों का मनोहारी दृश्य मंदिर के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देता है। मंदिर प्राङ्गण में प्रवेश के लिए शुल्क की व्यवस्था थी जो महाबलीपुरम् के सभी स्थानों के लिए एक साथ अदा किया जाना था। शायद यह पर्यटन विभाग द्वारा लिया जाने वाला पर्यटन कर था जो पर्यटन स्थलों के रख-रखाव के लिए था। मंदिर के अन्दर का वातावरण शान्त एवं सफाई की उत्तम व्यवस्था थी। बिस्कुट के कुछ टुकड़े फेकने पर मंदिर प्राङ्गण में अचानक लगभग सौ कौवों का एक साथ प्रकट हो जाना एवं खाने के लिए आग्रह करना अत्यन्त मन मोहक था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हम लोग उनके पूर्व परिचित हैं। हालांकि उन्हें कुछ देने की इजाजत नहीं थी। कृष्णा बटर बाल महाबलीपुरम् का दूसरा सबसे बड़ा आकर्षण का केन्द्र है। जो अपने आप में एक अजूबा है। प्राकृतिक रूप से तरासा लगभग गेंद के आकार का एक विशाल शिला खण्ड जिसका ऊपरी भाग अपेक्षाकृत बहुत चौड़ा जबकि सतह को छूता भाग बहुत छोटा होने के कारण उसका न केवल सामान्य जन वरन वैज्ञानिकों के लिए भी आश्चर्य एवं शोध का विषय है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे मानों लुढ़कने के लिए तैयार हो। पर्यटक जायें और कृष्णा बटर बाल के नीचे फोटो न खिंचवाए ऐसा सम्भव नहीं है। यात्रा की पूर्णता के लिए कृष्णा बटर बाल का दीदार आवश्यक है। बिना इसके यात्रा अधूरी है।

यूँ तो महाबलीपुरम में अनेकों मंदिर एवं देवालय मौजूद है पर सबका वर्णन न तो संभव है और न आवश्यक पर तीसरे आकर्षण का केन्द्र 'पंचरथा' के बिना यह यात्रा वृत्तान्त अधूरा रह जायेगा। शोर मंदिर के विपरीत दिशा में सागर तट पर फैले एक पथरीले भूभाग पर निर्मित रथनुमा पाँच मंदिर एवं उसमें विराजमान युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव की मूर्तियाँ ऐसा प्रतीत होती हैं मानो कुरुक्षेत्र के मैदान में रथ पर सवार पाँचों पाण्डव युद्ध के लिए तत्पर हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि भले ही हम भारतीय खान-पान एवं भाषा में दूरी के कारण भिन्न हैं पर हमारी संस्कृति और सोच एक है जो हम सभी को एक सूत्र में पिरोये है। यह मंदिर भारतीय शिल्प कला का अनूठा उदाहरण है। पत्थरों को तरास कर रथ का आकार देना एवं उसमें शस्त्रों से सुशज्जित योद्धा रूपी मूर्ति स्थापित करना इतना सहज नहीं रहा होगा।

यूँ तो महाबलीपुरम् घूमने से मन नहीं भर रहा था और सागर तट पर बैठ कर मचलती लहरों को अपलक निहारना अत्यन्त आनन्ददायक था पर समय इसकी इजाजत नहीं दे रहा था। समय से होटल पहुँचने की बाध्यता के कारण पग बलात बस अड्डे की तरफ खीचते चले गये। दक्षिण की यह प्रथम यात्रा आनन्द से भरपूर थी। यह एक नया अनुभव था जो मेरी मधुर स्मृतियों में से एक है। स्थानीय लोगों का व्यवहार मृदुल एवं सहयोगपूर्ण था परिणाम स्वरूप पूरे यात्रा के दौरान कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। सोने के आभूषणों से लदी स्थानीय महिलाओं को देखकर प्रभावी कानून व्यवस्था एवं सुदृढ़ संस्कारों का आभास अत्यन्त सुखद था। वैसे भी दक्षिण सद्भाव के लिए चर्चित है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण जगह-जगह देखने को मिला। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर नयनाभिराम दृश्यों का अवलोकन मन को बलात दक्षिण प्रान्त भ्रमण को आकर्षित करता है, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

क्या आप जानते हैं

- भारत का फिल्म उद्योग एक ऐसा उद्योग है, जहां हर साल दुनिया की सबसे ज्यादा फिल्में बनती हैं। भारत हर साल हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में 1500 से 2000 फिल्में बनाता है।
- भारत के जंगलों में बाघों की संख्या लगभग 2967 है। यह दुनिया की बाघों की आबादी का 70 प्रतिशत है और इनकी संख्या देश में तेजी से बढ़ भी रही है। साल 2018 की बाघ जनगणना रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले 12 सालों में भारत में बाघों की संख्या दोगुनी से ज्यादा हुई है। 2006 में बाघों की संख्या 1411 के करीब थी।
- भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 21 जून 2015 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के दिन एक सार्वजनिक योग कार्यक्रम का आयोजन किया था। जिसमें दिल्ली के राजपथ पर सबसे ज्यादा लोगों ने योगाभ्यास किया जिनकी संख्या 35,985 थी। इस प्रकार सबसे अधिक लोगों के इक्कठा होकर योग करने का विश्व रिकॉर्ड भारत के नाम हो गया।

अगस्त क्रांति में बैरिया (जिला बलिया) का योगदान

शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)
उ.प्र., लखनऊ

भारत की आज़ादी से सम्बन्धित इतिहास में दो पड़ाव सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण नज़र आते हैं- प्रथम '1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम' और द्वितीय '1942 ई. का भारत छोड़ो आन्दोलन'। 'क्रिप्स मिशन' की असफलता के बाद गाँधी जी ने एक और बड़ा आन्दोलन प्रारम्भ करने का निश्चय ले लिया। इस आन्दोलन को 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का नाम दिया गया। भारत छोड़ो आन्दोलन 9 अगस्त, 1942 ई. को सम्पूर्ण भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आह्वान पर प्रारम्भ हुआ था।

अंग्रेजों को देश से भगाने के लिए 4 जुलाई 1942 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें कहा गया कि यदि अंग्रेज भारत नहीं छोड़ते हैं तो उनके ख़िलाफ़ व्यापक स्तर पर नागरिक अवज्ञा आंदोलन चलाया जाए। इस प्रस्ताव को लेकर हालांकि पार्टी के भीतर मतभेद पैदा हो गए परन्तु 8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के बम्बई सत्र में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया गया। नौ अगस्त, 1942 को अगस्त क्रांति की शुरुआत हुई थी।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान यह पहला आन्दोलन था, जो नेतृत्व विहीनता के बाद भी उत्कर्ष पर पहुँचा। सरकार ने जब आन्दोलन को दबाने के लिए लाठी और बंन्दूक का सहारा लिया तो आन्दोलन का रुख़बदलकर हिंसात्मक हो गया। अनेक स्थानों पर रेल की पटरियाँ उखाड़ी गईं और स्टेशनों में आग लगा दी गई। बम्बई, अहमदाबाद एवं जमशेदपुर में मज़दूरों ने संयुक्त रूप से विशाल हड़ताल कीं। संयुक्त प्रांत में बलिया एवं बस्ती, बम्बई में सतारा, बंगाल में मिदनापुर एवं बिहार के कुछ भागों में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के समय अस्थायी सरकारों की स्थापना की गयी। पहली समान्तर सरकार बलिया में चितू पाण्डेय के नेतृत्व में बनी।

बलिया जिले के इतिहास में 18 अगस्त 1942 की क्रांति को अगस्त क्रांति के नाम से जाना जाता है। इस दिन अन्य स्थानों की तरह बैरिया थाने पर तिरंगा फहराते समय 18 क्रांतिकारी शहीद हो गए थे। शहीद क्रांतिकारियों की याद में बैरिया थाने के सामने शहीदों की याद में एक शहीद स्मारक बना है जहाँ प्रत्येक वर्ष शहीद स्मारक परिसर में मेला लगता है जिसमें लोग शहीदों को नमन करते हैं। अगस्त क्रांति को लेकर क्रांतिकारियों के हौसले काफी बुलंद थे। क्रांतिकारियों ने रेलवे स्टेशन फूंक दिया था रेल पटरियों को उखाड़ दी थीं। 18 अगस्त 1942 से दो दिन पहले बैरिया में भूपनारायण सिंह, सुदर्शन सिंह के साथ हजारों की भीड़ के आगे थानेदार काजिम ने खुद ही थाने पर तिरंगा फहराया था। जिला बलिया के साथ बैरिया तहसील भी आजाद हो गयी, तथा सामानांतर सरकार का गठन हुआ। थानेदार काजिम ने थाना खाली करने के लिए क्रांतिकारियों से दो दिन की मोहलत मांगी थी। उसी दिन रात में थानेदार ने जिला मुख्यालय बलिया से पाँच सशस्त्र पुलिसकर्मियों को बुला लिया था और रात में तिरंगे को उतारकर फेंकवा दिया। इसकी भनक लगते ही क्रांतिकारियों ने थानेदार से बदला लेने के लिए 18 अगस्त तय की। दोपहर होते-होते 25 हजार से अधिक लोगों ने थाने को घेर लिया। महिलाओं की अगुवाई धनेश्वरी देवी, तेतरी देवी, राम झरिया देवी कर रही थीं। भूपनारायण सिंह, सुदर्शन सिंह, परशुराम सिंह, बलदेव सिंह, हरदेव सिंह, राजकिशोर सिंह, बैजनाथ साह, राजकुमार मिश्र आदि भीड़ का नेतृत्व कर रहे थे। थाने पर भीड़ को देख थानेदार ने थाने की छत पर सिपाहियों संग पहुँच कर मोर्चा संभाल लिया। इसी बीच कुछ लोग थाने में बगल से घुस गए और थाने के घोड़े को खोलकर अस्तबल ध्वस्त कर दिया। इसके बाद भीड़ थाने में घुस गई। यह देख पुलिस ने गोलियां चलाई तो क्रांतिकारियों ने पथराव कर दिया था। कौशल कुमार छलांग लगाकर थाने की छत पर पहुंच गए और तिरंगा फहरा दिया लेकिन पुलिस की गोली से वह शहीद हो गए। कौशल कुमार के शहीद होते ही दूसरे क्रांतिकारियों ने तिरंगा थाम लिया, परन्तु झंडे को जमीन पर गिरने नहीं दिया। शाम तक चले इस संघर्ष में कुल 18 लोग शहीद हो गए थे। अंततः थानेदार काजिम को भागना पड़ा और बैरिया थाना पुनः आजाद हो गया।

शहीद होने वालों में गोन्हिया छपरा निवासी निर्भय कुमार सिंह, देवबसन कोइरी, विशुनपुरा निवासी नरसिंह राय, तिवारी के मिल्की निवासी रामजनम गोंड, चांदपुर निवासी रामप्रसाद उपाध्याय, टोलागुदरीराय निवासी मैनेजर सिंह, सोनबरसा निवासी रामदेव कुम्हार, बैरिया निवासी रामबृक्ष राय, रामनगीना सोनार, छठू कमकर, देवकी सोनार, शुभनथही निवासी धर्मदेव मिश्र, मुरारपट्टी निवासी श्रीराम तिवारी, बहुआरा निवासी मुक्तिनाथ तिवारी, श्रीपालपुर निवासी विक्रम सोनार, भगवानपुर निवासी भीम अहीर शामिल थे। जबकि दयाछपरा निवासी गदाधर नाथ

पांडेय, मधुबनी निवासी गौरीशंकर राय, गंगापुर निवासी रामरेखा शर्मा सहित तीन लोगों की जेल यातना में मृत्यु हुई। इसके अलावा भी कितने क्रांतिकारियों को जेल की काल कोठरी में डाल दिया गया, जिसका नाम तक प्रकाश में नहीं आ सका। शहीदों व सेनानियों की कुर्बानियों को भुलाया नहीं जा सकता है।

'भारत छोड़ो आन्दोलन' भारत को स्वतन्त्र भले न करवा पाया हो, लेकिन इसका दूरगामी परिणाम सुखदायी रहा। इसलिए इसे ''भारत की स्वाधीनता के लिए किया जाने वाला अन्तिम महान् प्रयास'' कहा गया। इस अन्तिम महान प्रयास में बलिया का योगदान अग्रणी माना गया है। बैरिया- बलिया में द्वाबा शहीद स्मारक ''स्वतंत्र बलिया- प्रजातंत्र'' [की स्थापना के निमित्त] वीर गति पाने वाले द्वाबा के अमर शहीदों की पुण्य स्मृति में द्वाबा की जनता द्वारा स्थापित है।

बाल-बाल बचे

संजीव कुमार श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

यह संस्मरण वर्ष 2015 से सम्बंधित है जब मुझे शाखा कार्यालय पटना से संबद्ध कर दिया गया था एवं पटना कार्यालय में उपस्थित होते ही मुझे विभिन्न इकाइयों की लेखा परीक्षा हेतु वाह्य दल के सदस्य के रूप में भेज दिया गया। लेखा परीक्षा की जाने वाली इकाइयों में से एक बरौनी रिफाइनरी भी थी। जब में बरौनी रिफाइनरी पहुंचा, तो पता चला कि उसी परिसर में एक प्रसिद्ध अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय भी है, [जहाँ मैं लेखा परीक्षा हेतु गया था।] उस विद्यालय की प्रधानाध्यापिका रिश्ते में मेरी बड़ी बहन है और अपने कड़क स्वभाव के लिए उस क्षेत्र में प्रसिद्ध थी। मैं उनसे मिलने के लिए विद्यालय पहुंचा, तो उनके कक्ष में कुछ अन्य लोग भी थे। दीदी ने वहां उपस्थित लोगो से मेरा परिचय कराया और यह भी बताया कि मैं बरौनी रिफाइनरी जैसी बड़ी इकाई की लेखा परीक्षा के लिए यहाँ आया हूँ। जैसा कि हर कार्यालय में होता है वहां उपस्थित सदस्यों में से, कुछ ने प्रधानाध्यापिका (दीदी) को खुश करने हेतु प्रस्ताव दिया कि मैडम यहाँ के छात्रों के उत्साहवर्धन हेतु, आपके भाई का एक (प्रेरक भाषण) करा दिया जाए तो बड़ा अच्छा होगा। प्रधानाध्यापिका महोदया को प्रस्ताव पसंद आ गया और इस बात पर सहमत होते हुए उन्होंने मुझे लेक्चर देने हेतु कहा। मेरा हाथ अंग्रेजी भाषा में कितना तंग है, यह कार्यालय में किसी से भी नहीं छुपा है। यह प्रस्ताव मिलते ही, मुझे खतरे का आभास हो गया, क्योंकि अंग्रेजी माध्यम के प्रसिद्ध विद्यालय में मुझे लेक्चर देना था। बहुत कहने के बावजूद भी वह लोग, इस बात के लिए तैयार नहीं थे कि इस मोटिवेशन-स्पीच का कार्यक्रम न रखा जाए। खैर, उस दिन तो मैं वहां से वापस आ गया, पर इस परेशानी से उबरने का, मुझे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। तभी, एकाएक मुझे एक कार्य हेतु पटना कार्यालय से बुलावा आ गया और मुझे लगा कि भगवान् ने मेरी प्रार्थना सुन ली और मुझे इस परेशानी से बचा लिया।

मैंने भगवान् का शुक्रिया अदा किया और उस विद्यालय की प्रधानाध्यापिका (दीदी) को, कार्यालय आदेश के बारे में सूचना देकर बरौनी से प्रस्थान कर गया। मुझे लगा कि मैं बाल-बाल बच गया, क्योंकि यदि यह आदेश न आता, तो मेरी क्या दशा होती, इसकी कल्पना मात्र से ही मेरा मन सिहर जाता है।

क्या आप जानते हैं

वाराणसी दुनिया का सबसे पुराना बसा हुआ शहर माना जाता है। गंगा नदी के तट पर स्थित और देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संसद में प्रतिनिधित्व किया गया, पवित्र शहर बनारस या वाराणसी कम से कम 3000 वर्ष पुराना है।

बाबू वीर कुँवर सिंह

राम जनम राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

''अस्सी वर्षों की हड्डी में जागा जोश पुराना था

सब कहते हैं कुँवर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था''

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों में से एक वीर बाबू कुँवर सिंह के बलिदान को कौन भूल सकता है। इनकी बहादुरी के कारनामों को सुनकर, दिल जोश से भर जाता है और आंखें नम होने लगती हैं। मन में बस यही ख्याल आता है कि जाने कैसे लोग थे, जिन्होंने न जान की परवाह की, न एशो-आराम की। बस निकल पड़े देश को आज़ाद कराने के संकल्प के साथ। इन आज़ादी के परवानों को न तो उनकी उम्र रोक पाई और न ही कोई और मोह।

आज की कहानी है बिहार के सपूत, बाबू वीर कुंवर सिंह की, जिन्होंने 80 वर्ष की आयु में अपनी जान की बाजी लगा दी और ना केवल अंग्रेजों के खिलाफ़ युद्ध का बिगुल बजाया, बल्कि कई युद्धों में अंग्रेजों को परास्त भी किया।

वीर कुंवर का जन्म सन 1777 में बिहार के भोजपुर जिले के जगदीशपुर गांव में हुआ था। खेल खेलने की बजाय, कुँवर का बचपन घुड़सवारी, निशानेबाज़ी, तलवारबाज़ी सीखने में बीता। छत्रपति शिवाजी महाराज की युद्ध नीति से वे काफी प्रभावित थे। कुंवर सिंह को गोरिल्ला युद्ध नीति की पूर्ण जानकारी थी और अंग्रेजों को हराने के लिए उन्होंने इस नीति का उपयोग बार-बार किया।

जब सन 1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का शंखनाद हुआ तब वीर कुंवर की आयु 80 बरस की थी। उम्र के इस पड़ाव पर युद्ध करना तो दूर, युद्ध की बात सोचना भी बेमानी लगता है, लेकिन उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपने सेनानी भाइयों का साथ देते हुए अंग्रेजों का डटकर मुकाबला करने की ठानी। जिनके दिल में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई हो, उन्हें कौन रोक सकता था। उन्होंने तुरंत अपनी शक्ति को एकजुट किया और अंग्रेजी सेना के खिलाफ मोर्चा संभाला। उन्होंने अपने सैनिकों और कुछ साथियों के साथ मिलकर सबसे पहले आरा नगर (आरा जिला) से अंग्रेजी आधिपत्य को उखाड़ फेका।

लेकिन अंग्रेजी सेना को कहां ये मंजूर था। कुछ दिनों की शांति के बाद, उन्होंने फिर से दुगुनी ताकत के साथ वीर कुंवर पर प्रहार किया और इस बार वीर कुंवर को अपना घर छोड़कर भागना पड़ा। उन्होंने इस हार को पराजय नहीं माना बल्कि इसे उन्होंने एक अवसर की तरह लिया। उन्होंने आंदोलन को और मजबूती देने के लिए मिर्जापुर, बनारस, अयोध्या, लखनऊ, फैजाबाद, रीवा, बांदा, कालपी, गाजीपुर, बांसडीह, सिकंदरपुर, मनियर और बलिया समेत कई अन्य जगहों का दौरा किया। वहां उन्होंने नए साथियों को संगठित किया और उन्हें अंग्रेजों का सामना करने के लिए प्रेरित किया।

इस तरह जैसे-जैसे इन इलाकों के लोग संगठित होने लगे, अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह बढ़ने लगे। ब्रिटिश सरकार के लिए वीर कुंवर आंख की किरकिरी बन गए थे, जिसे निकाल बाहर फेंकना उनके अस्तित्व के लिए बेहद ज़रूरी था। उन्होंने अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ, कुछ भारतीयों को फोड़ने का काम शुरू कर दिया और पैसे का लालच देकर कुछ को अपने साथ मिला लिया। फिर भी अंग्रेजों के लिए वीर कुंवर से छुटकारा पाना आसान नहीं

रहा। कहते हैं कि अपनी अनोखी गोरिल्ला युद्ध नीति से उन्होंने अंग्रेजों को सात बार परास्त किया था।

भोजपुर में अंग्रेजों को हराने के बाद, वीर कुंवर ने कानपुर की ओर रुख किया जहां उन्होंने तात्या टोपे और नाना साहेब का साथ दिया। इस युद्ध में भी कुंवर साहब की वीरता ने सबको बहुत प्रभावित किया। कानपुर के बाद आजमगढ़ में भी उन्होंने अंग्रेजों को नाकों चने चबवाए। हालांकि, हर बार विजय मिलने के बाद अंग्रेज़ी हुकूमत दोबारा अपनी पूरी ताक़त से हमला कर के अपना कब्ज़ा वापिस ले लेती थी। पर, उनके दिल में वीर कुंवर का डर बैठ चुका था। वे जल्द से जल्द उनसे छुटकारा पाना चाहते थे।

बताया जाता है कि वीर कुंवर की हर युद्ध नीति पहले से भिन्न होती थी क्योंकि वे प्रत्येक युद्ध को नए कौशल नीति से लड़ने में माहिर थे। एक बार उनकी सेना अंग्रेजों के आक्रमण के साथ पीछे हट गई और अंग्रेजों को लगा कि वे जीत गए। लेकिन यह वीर कुंवर की युद्ध नीति थी क्योंकि जब अंग्रेज सेना अपनी जीत के नशे में उत्सव मना रही थी तब उन्होंने अचानक से आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण से ब्रिटिश सिपाहियों को सम्भलने का मौका तक नहीं मिला। इसी तरह हर बार एक नयी नीति से वह अंग्रेजों के होश उड़ा देते थे।

आजमगढ़ के युद्ध के बाद बाबू कुंवर सिंह 20 अप्रैल 1858 को गाजीपुर के मनोहर गांव पहुंचे। वहां से वह अपने कुछ साथियों के साथ आगे बढ़ते हुए 22 अप्रैल को गंगा नदी के रास्ते जगदीशपुर लौट रहे थे। आप दुश्मन के वार से अपने आप को बचा सकते हो, पर देशद्रोहियों के वार से अपने आप को कब तक बचा पाओगे। 'घर का भेदी लंका ढाए' इस कथन को चरितार्थ करते हुए किसी देशद्रोही ने इस बात की खबर अंग्रेजों तक पहुंचा दी।

अंग्रेजों ने इस मौके का फायदा उठाते हुए रात के अंधेरे में नदी में ही उन पर आक्रमण कर दिया और गोलियां बरसाना शुरू कर दिया। अंग्रेजों की तुलना में उनके सिपाही बहुत कम थे लेकिन वीर कुंवर तनिक भी घबराये नहीं। उन्होंने अपनी पूरी ताकत से अंग्रेजों का मुकाबला किया। इस मुठभेड़ में वे घायल हो गए तथा एक गोली उनके दाहिने हाथ में आकर लग गयी, लेकिन उनकी तलवार नहीं रुकी। कुछ समय पश्चात जब उन्हें लगा कि गोली का जहर पूरे शरीर में फ़ैल रहा है तो इस वीर सपूत ने अपना हाथ काटकर गंगा नदी को अर्पण कर दिया:

अर्पण हाथ तुझे गंगे, करो माँ आज इसे स्वीकार,
कटे हाथ, पैर या शीश, पर संग्राम न जाये बेकार।

कवि मनोरंजन प्रसाद ने वीर कुँवर के साहस को अपनी कविता में यूँ लिखा :

दुश्मन तट पर पहुँच गए, जब कुंवर सिंह करते थे पार।
गोली आकर लगी बाँह में, दायाँ हाथ हुआ बेकार।।
हुई अपावन बाहु जान बस, काट दिया लेकर तलवार।
ले गंगे, यह हाथ आज तुझको ही देता हूँ उपहार।।
वीर मात का वही जाह्नवी को मानो नजराना था।
सब कहते हैं कुंवर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था।।

कहते हैं, हाथ कट जाने के बावजूद भी वह लड़ते रहे और जगदीशपुर पहुंच गए। हाथ के जख्म काफी गहरे हो गए थे और जहर उनके पूरे शरीर में फ़ैल चुका था, जिसके कारण उनकी तबियत काफी नाजुक हो गई थी। लेकिन वीर कुंवर को अपनी रियासत अंग्रेजों से छुड़ानी थी और उन्होंने अपने जीवन के अंतिम युद्ध का बिगुल बजाया। उनकी वीरता के आगे एक बार फिर अंग्रेजों ने घुटने टेके और जगदीशपुर पर वे फिर से काबिज हो गए। लेकिन इस जीत का जश्न बहुत देर तक कायम नहीं रह सका क्योंकि भारत माँ के इस वीर सपूत ने अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों के कब्ज़े से आज़ाद कराने के तीन दिन बाद 26 अप्रैल 1858 को हमेशा-हमेशा के लिए दुनिया से विदा ले ली थी।

हिंदी साहित्य की महान कवयित्री, सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी उन्हें अपनी मशहूर कविता, 'झाँसी की रानी' में स्थान दिया है:

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुंवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुरबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

क्या आप जानते हैं

दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ डाकघर श्रीनगर की डल झील में है। भारत न केवल दुनिया में सबसे बड़ी संख्या में डाकघरों के लिए जाना जाता है, बल्कि श्रीनगर में डल झील पर इसका अपना तैरता हुआ डाकघर भी है। एक हाउसबोट पर स्थित, इसमें एक डाक टिकट संग्रह संग्रहालय भी शामिल है।

योग एक जीवन पद्धति

संजीव चटर्जी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

एक प्रचलित कबीर दास जी का दोहा है कि "दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे ना कोई। जो सुख में सुमिरन करे, सो दुःख काहे को होई।।" इस दोहे को हम योग के परिप्रेक्ष्य में इस प्रकार भी समझ सकते है कि यदि हम अपने स्वस्थ रहने के दौरान योगासन और प्राणायाम का [यदि] दैनिक अभ्यास करें तो हम जीवन पर्यन्त शारीरिक एवं मानसिक रूप से निरोगी रह सकेंगे।

योगासन और प्राणायाम का विकास भारत में हुआ है जो मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के विकास से जुड़ा हुआ है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने विभिन्न योगासनों का विकास कर मनुष्य के जीवन को स्वस्थ एवं प्रसन्नता से परिपूर्ण करने की चेष्टा की थी।

साधारण रूप से योग का अर्थ है जोड़ना। योग + आसन जिससे योगासन शब्द बना है का संपूर्ण अर्थ है ऐसे आसन जो मनुष्य को परमात्मा से जोड़ते हैं। आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व भारतीय मनीषी पतंजलि ने योगशास्त्र की रचना की थी जिसमें उन्होंने योग शब्द का प्रयोग मन की प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखने के लिए किया था।

समस्त यौगिक क्रियाओं में सर्वश्रेष्ठ सूर्य-नमस्कार के लिये भी प्रातः काल सूर्योदय का समय सर्वोत्तम माना गया है। सूर्यनमस्कार सदैव खुली हवादार जगह पर कम्बल का आसन बिछा खाली पेट अभ्यास करना चाहिये। इससे मन शान्त और प्रसन्न हो तो ही योग का सम्पूर्ण प्रभाव मिलता है। सूर्य-नमस्कार के नियमित अभ्यास से शारीरिक और मानसिक स्फूर्ति की वृद्धि के साथ विचारशक्ति और स्मरणशक्ति भी तीव्र होती है।

योग के माध्यम से शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के सामूहिक विकास के प्रयास किए जाते हैं। इसका लक्ष्य शरीर और मन को प्रशिक्षण देना होता है तथा आसन अपने असाधारण प्रभाव के कारण इसका एक अभिन्न अंग है। इसी तरह प्राणायाम श्वास-प्रश्वास पर नियंत्रण रखने एवं इसे नियमित करने का विज्ञान है।

जब हम क्रोध में होते हैं तब हमारी साँस कुछ और ढंग से चलती है तथा जब हम शांतचित्त होते हैं हमारी साँस की लय बदल जाती है। दुःख, संताप, आवेग, खुशी, आनद जैसे अलग-अलग मनोभावों के आगमन पर साँस की लय एवं रफ्तार घटती-बढ़ती रहती है। प्राणायाम में साँस भीतर लेना, फिर रोकना और बाहर निकालना तथा फिर रोकना ये क्रियाएँ रीतिपूर्वक संपन्न होती हैं।

साँस रोकना कुंभक कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है- आतरिक कुंभक और बाह्य कुंभक। आतरिक कुंभक साँस लेने तथा उसे छोड़ने के मध्य का समय है। बाह्य कुंभक साँस बाहर निकालने और फिर साँस भीतर लेने के बीच का समय है। इन विधियों का अभ्यास करने से श्वसन तंत्र, नाड़ी तंत्र आदि पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है तथा मानव मस्तिष्क अधिक सक्रिय होकर कार्य करने लगता है।

योगासनों तथा प्राणायाम का सही अभ्यास परमावश्यक है। इनके गलत अभ्यास से लाभ के स्थान पर हानि होने की संभावना अधिक रहती है। विभिन्न परिस्थितियों में अर्थात् अलग-अलग शारीरिक दशा वाले व्यक्तियों के लिए किस तरह का आसन उपयोगी है, इसका निर्णय प्रशिक्षक या गुरु ही भली-भाँति कर सकते हैं। उचित समय, उचित स्थान, स्नान, स्वच्छता, भोजन एवं वस्त्र इत्यादि का निर्णय भी आवश्यक है तभी हम योगासन और प्राणायाम का उचित लाभ उठा सकते हैं।

योगासन और प्राणायाम का उचित समय प्रातःकाल या सायंकाल होता है जब व्यक्ति का पेट खाली होता है। समतल स्थान

पर चादर, दरी आदि बिछाकर इनका अभ्यास करना लाभप्रद होता है। लेकिन शुरू-शुरू में किसी योग्य प्रशिक्षक के समक्ष ही इनका अभ्यास करना नितांत आवश्यक है।

आधुनिक युग में मनुष्य का स्वास्थ्य गलत आहार-विहार, असंयम तथा तनाव के कारण बिगड़ता जा रहा है। खिला चेहरा, तेजोमय व्यक्तित्व, गठीला शरीर, शारीरिक श्रम बिना थके करने की क्षमता, सर्दी-गर्मी सहन करने की सामर्थ्य, चमकीले नेत्र, चौड़ी छाती, गंधरहित साँस, प्रातःकाल उठने पर ताजगी एवं प्रसन्नता का अनुभव, सिर ठंडा, तलवे गरम आदि उत्तम स्वास्थ्य के लक्षण हैं जिनका अधिकांश व्यक्तियों में अभाव देखा जाता है।

बहुत से लोग नित्य महँगी दवाइयों पर निर्भर हैं, यहाँ तक कि रात्रिकाल में सोने के लिए भी दवाई खानी पड़ती है। मधुमेह, कब्ज, हृदय रोग, यौन विकार, खाँसी, आँत वृद्धि, थकावट, एसीडीटी, पाचन प्रणाली की दुर्बलता जैसे रोगों में वृद्धि हो रही है। आम व्यक्ति किसी न किसी शारीरिक समस्या से पीड़ित है।

ऐसे में योगासनों का महत्व और भी बढ़ जाता है। इनके समुचित अभ्यास से विभिन्न प्रकार की शारीरिक बीमारियाँ शनैः-शनैः दूर हो जाती हैं। शरीर बलशाली बनता है जिससे रोग पुनः होने की संभावना भी समाप्त हो जाती है। योगासन और प्राणायाम स्मरण शक्ति के विकास को संभव बनाते हैं तथा चित्त में शांति और धैर्य उत्पन्न होता है।

आइये हम आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में ''रोग भारत छोड़ो'' का संकल्प लें तथा भारत राष्ट्र को रोगमुक्त बनायें जहाँ धर्म सम्प्रदाय से ऊपर उठकर हम सब स्वस्थ रहें एवं राष्ट्र के उन्नति में भागीदार बनें। जय हिन्द।

लेखापरीक्षा-धर्म

आशुतोष कुमार श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा,
लखनऊ

एक बार जार्ज बर्नाड शॉ ने विश्व के तत्कालीन बड़े बड़े लोगों को एक पत्र लिखकर पूछा कि ''मनुष्य के अधिकार क्या हैं ? यह पत्र गाँधी जी के पास भी आया, गाँधी जी ने उत्तर दिया कि मनुष्य का कोई अधिकार नहीं है, उसका केवल कर्तव्य है, जिसे हम धर्म कहते हैं, धर्म व्यक्तिगत होते हैं और एक ही व्यक्ति के अनेक धर्म भी हो सकते हैं, जैसे पितृधर्म, पुत्रधर्म, पत्नीधर्म, शिक्षकधर्म, शिक्षार्थीधर्म, राजधर्म, प्रजाधर्म, स्वामीधर्म, सेवकधर्म..... आदि आदि। यदि सब लोग अपने अपने धर्म का पालन करें तो सबको उनके अधिकार स्वतः मिल जायेंगें।

यही भारतीय चिंतन है। यदि एक भी व्यक्ति अपने अधिकारों से वंचित है तो इसका अर्थ केवल यह है कि कहीं न कहीं कोई अपने धर्म का पालन नहीं कर रहा है।

श्रीरामचरितमानस में एक वाक्य में धर्म की परिभाषा भी बताई गई है और अधर्म की भी। किसी का हित करने के समान कोई धर्म नहीं है. और किसी को पीड़ा पहुँचाने के समान कोई अधर्म नहीं है. हो गई परिभाषा।

परहित सरिस धरम नहि भाई ! परपीड़ा सम नहि अधमाई!!

धर्म, पंथ, सम्प्रदाय, रिलीजन या मजहब का पर्यायवाची नहीं है। ये सब अलग विषय है। ऐसे ही धर्म का अर्थ सत्य भी नहीं है। बधिक से जीव की रक्षा हेतु बोला गया असत्य भी धर्म है।

हमारा धर्म है लेखापरीक्षा। यदि हम सब पूरी निष्ठा और शक्ति से अपने इस धर्म का पालन करें तो देश की अर्थव्यवस्था को शिखर पर पहुंचा सकते है। हमारे देश में शक्ति और संसाधनों की कोई कमी नहीं है। केवल उनके सुनियोजित प्रयोग की आवश्यकता है। जिसमें अपनी भूमिका का निर्वाह करने का दुर्लभ सुअवसर हम सब को प्राप्त हो चुका है।

ऐसा कोई अक्षर नहीं है जिससे मन्त्र की रचना न हो सके, ऐसी कोई वनस्पति नहीं है, जो औषधि न हो, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसका कोई उपयोग ही न हो, केवल इनका सही उपयोग करने वाले योजक अर्थात प्रबंधक की आवश्यकता है।

अमंत्रं अक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधं!

अयोग्यः पुरूषो नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः!!

लेखापरीक्षक राष्ट्र के वित्तयोजक की भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। वैसे भी हम राष्ट्र के वित्त प्रहरी तो हैं ही।

भारत कोई साधारण देश नहीं है। भा का अर्थ है प्रभा, प्रकाश, भारत का अर्थ है नित्य प्रकाश बिखेरने वाला।

प्रत्येक भारतीय का धर्म है कि वह भारत को अधिक से अधिक प्रकाशमान करता रहे। क्योंकि भारत के ज्ञान प्रकाश से ही सम्पूर्ण धरा प्रकाशित होती रही है। समस्त जगत को भारत के दिव्य आध्यात्मिक ज्ञान से प्रकाशित करना प्रत्येक भारतीय का धर्म है।

संवाद-सम्प्रेषण प्रवीणता और नजरिया

बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

सृष्टि के प्राणियों में मनुष्यों की एक विशिष्टता ये है कि उन्हें ईश्वर द्वारा वाचिक (वर्बल) और अवाचिक (नॉन-वर्बल) संवाद-सम्प्रेषण का गुण प्रदान किया गया है। किसी भी संवाद-सम्प्रेषण के दौरान, प्रायः जानकारी, सूचना एवं अन्तर्निहित भाव का आदान-प्रदान किया जाता है। किसी तथ्य या वस्तु के प्रति, व्यक्ति की समझ, उसके नजरिये (दृष्टिकोण) का परिचायक होती है, जो व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्न हो सकती है। वस्तुतः, किसी तथ्य, वस्तु या व्यक्ति को ''जैसा है-वैसा ही'' समझना अत्यंत कठिन होता है, क्योंकि नजरिये के अनुसार, एक ही तथ्य, वस्तु या व्यक्ति के प्रति, अलग-अलग व्यक्तियों की समझ भिन्न-भिन्न होती है। इसीलिए कहा गया है कि ''जैसी दृष्टि-वैसी सृष्टि'' अर्थात संसार और सृष्टि के प्रति, व्यक्ति का जैसा नजरिया होता है, उसे, ये वैसे ही दिखते हैं। इस समझ का आधार होता है, उस व्यक्ति द्वारा जीवन-यात्रा के दौरान अर्जित शिक्षा-दीक्षा, ज्ञान, अनुभव, संस्कार, विचारणा, अहं-भाव का स्तर तथा जागृत चेतना। ऐसा कहा जाता है कि रूप और आकृति में व्यक्ति समान हो सकते हैं, किन्तु उनकी विचारणा शक्ति भिन्न-भिन्न हो सकती है। इसीलिए, किसी तथ्य या वस्तु के प्रति एकाधिक लोगों में एक-जैसी समझ (मतैक्य) अथवा भिन्न समझ (मतभेद) की स्थिति से, प्रायः हर-एक को दो-चार होना पड़ता है और संवाद-सम्प्रेषण के दौरान वाद-विवाद भी होता रहता है।

यह भी तथ्य है कि व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, सांगठनिक और सार्वजनिक जीवन में लिए जाने वाले विभिन्न निर्णयों एवं उन्हें तदनुसार क्रियान्वित करने में चुनौतीपूर्ण संवाद-सम्प्रेषण की प्रक्रिया से गुजरते हुए, ऐसे निर्णयों से सम्बन्धित अथवा प्रभावित अन्य व्यक्तियों की पूर्णतः या अंशतः सहमति तक पहुंचा जाता है। सामान्यतः किसी व्यक्ति का, तथ्य या वस्तु विशेष के प्रति नजरिये अर्थात ''समझ'' को समझना कठिन होता है। हालाँकि, संवाद-सम्प्रेषण प्रवीणता के विकास हेतु संवाद-प्रतिभागियों को जानकारी तथा सूचना के साथ ही, एक-दूसरे की ''समझ'' (नजरिया) को समझना और साझा करना अनिवार्य होता है। इसीलिए ये भी कहा जाता है कि संवाद-सम्प्रेषण के दौरान ''स्वयं की समझ को समझे जाने से पूर्व, कद और पद का भेद किये बिना, और अहं-भाव से रहित होकर, अन्य संवाद-प्रतिभागी की समझ को समझना'' भी संवाद-सम्प्रेषण प्रवीणता हेतु सार्थक सिद्ध होता है।

यह भी तथ्य है कि जीवन यात्रा में व्यक्ति को अन्तः संवाद-सम्प्रेषण भी लगातार करना पड़ता है, जहाँ घटित होने वाली अनुकूल और प्रतिकूल घटनाओं के प्रति उसका नजरिया ही उसे सुख या दुःख की अनुभूति कराता है। ऐसी घटनाओं के प्रति सकारात्मक नजरिया, जहाँ उत्प्रेरक का कार्य करता है, वहीं नकारात्मक नजरिया, उसे हतोत्साहित और कमजोर कर देता है। यह नजरिया ही तो है, जिसके अनुसार, ''असफलता'' को कुछ लोग ''असफलता'' ही मानकर, हतोत्साहित हो जाते हैं। वहीं, कुछ लोग इसे ''आंशिक सफलता'' या सफलता की ओर ''पड़ाव'' मानकर, पूर्ण उत्साह के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासों को निरंतर धार देते रहतें हैं। इसी प्रकार, किसी प्रतियोगिता में विजय न प्राप्त करने वाला व्यक्ति, स्वयं को हारा हुआ न मानकर, उपविजेता ही मानता है।

उपर्युक्त विवेचना से नजरिया की महत्ता स्वतः ही स्पष्ट है जो अन्तः संवाद-सम्प्रेषण के साथ-साथ बाह्य संवाद-सम्प्रेषण में उल्लेखनीय भूमिका निभाता है। संवाद-सम्प्रेषण, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अहम अंग होता है और संवाद-सम्प्रेषण प्रवीणता एक ऐसा महत्वपूर्ण गुण है जिसका क्रमिक रूप से विकास किया जा सकता है। कुशल एवं सफल संवाद-सम्प्रेषण हेतु अपनी समझ को समझे जाने से पूर्व दूसरे की समझ को समझना और तदनुसार संवाद-सम्प्रेषण प्रक्रिया को सम्पादित करना अत्यंत आवश्यक होता है। ऐसे कुशल और सफल संवाद-सम्प्रेषण के दृष्टान्त, एक अच्छे अध्यापक, प्रशिक्षक, किसी संगठन के नेतृत्वकर्ता और प्रबंधक आदि में देखे जा सकते हैं, जो सामान्य से भिन्न, पेशेवर ढंग से अपने कार्य-व्यवहार को शासित करते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वयं भी सफलता और सम्मान प्राप्त करते हैं और दूसरों को भी अपने कार्य-व्यवहार के दृष्टान्तों से अनवरत प्रेरित करते हैं।

ग़ज़ल

लीना दरियाल 'सत्यम'
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
लखनऊ

ग़ज़ल-1

हरेक पैरहन को तार-तार होना है
तेरे जाने पे सबको ज़ार-ज़ार रोना है

तू मोह-माया में उलझा हुआ है क्यों बन्दे
जहां ये कुछ भी नहीं, सिर्फ जादू-टोना है

पलों की यादें हैं, कुछ ही पलों के ये मंज़र
रहेगा कुछ भी नहीं, जो भी है, वो खोना है

मिला जो वक़्त, उसे खो न यूँ ही सो-सोकर
वो दिन भी आएगा जब लंबी नींद सोना है

सदा के वास्ते ठहरा है कौन इस जग में
कभी तो टूटेगा, मिट्टी का ये खिलौना है

ग़ज़ल-2

दराज़ अक्सर पुरानी टेबलों के जब भी खुलते हैं
ख़ज़ाने ख़ूबसूरत नर्म यादों के निकलते हैं

मचलती हैं कभी, बरसों पुरानी जब तमन्नाएं
न जाने दर्द कितने अश्क़ की सूरत पिघलते हैं

अचानक राह चलते याद मिल जाती है जब कोई
क़दम पत्थर से हो जाते हैं रुकते हैं न चलते हैं

समर आने से पहले ही खिज़ां फिर आ धमकती है
बड़ी जल्दी ये ज़ालिम उम्र के मौसम बदलते हैं

किसी बच्चे से होते हैं क़दम इन ख़्वाहिशों के भी
बहक गर इक दफा जाएं तो मुश्किल से संभलते हैं

मयस्सर कब हुआ हर शम्स को डूबे वो वक़्ते-शाम
हज़ारों शम्स हैं जो वक़्त से पहले भी ढलते हैं

इरादों का ये जंगल ख़ुश्क़ होता ही नहीं सत्यम
ये ऐसे पेड़ हैं जो बिन हवा पानी के पलते हैं

ग़ज़ल-3

उड़ती हुई ख़बरों को कलमों से पकड़ते हैं
वो झूठ को भी ऐसे अब सच में बदलते हैं

जल्दी लगी है, उनको यूँ आगे निकलने की
चलते हुए अचानक राहों में उछलते हैं

उड़ना वो तितलियों का भी देख नहीं पाते
मौका मिले तो उनके भी पर, ये कतरते हैं

दामन से खूं के धब्बे है आसान नहीं जाना
जुल्मों को छुपा, खुद को पाकीज़ा समझते हैं

मजलूम के ये आँसू क्या लाएंगे सुनामी
सत्यम ये सोच कर वो हर हद से गुज़रते हैं

ग़ज़ल-4

किरदारों के बिना कहानी क्या कहना
कभी नई और कभी पुरानी क्या कहना

बड़े-बुजुर्गों पर भी कुछ तो कहिये आप
बार-बार बस वही जवानी क्या कहना

बहुत जहां हैं अभी सितारों से आगे
हरदम ही धरती की निशानी क्या कहना

कभी तो ठहरे तालाबों को भी देखो
हर बारी, दरिया तूफ़ानी क्या कहना

कभी तो समझो बिना कहे भी कुछ बातें
सारी बातें सदा ज़ुबानी क्या कहना

कभी सुकूं को छोड़, कहो बैचेनी भी
यूँ ही कोई बात रूहानी क्या कहना

बहते अश्क़ों को सत्यम अब बांधो भी
हर पल तूफ़ां और रवानी क्या कहना

मैया

जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय)
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा,
लखनऊ

चाँद से प्यारी होती है,
सूरज से प्यारी होती है।
मुझको नहीं पता था,
कि मैया ऐसी होती है।।
सींच देती है अपने स्नेह से,
इस दुनियाँ के बागों को।
बन जाती है दया की सागर,
ऐसी क्यारी होती है।।
चाँद से प्यारी होती है,
सूरज से प्यारी होती है।
मुझको नहीं पता था,
कि मैया ऐसी होती है।।
मुस्कराहट भी वो ला देती है,
सूने सूने होठों पर।
कर देती है मंत्रमुग्ध वो,
जगत दुलारी होती है।।
चाँद से प्यारी होती है,
सूरज से प्यारी होती है।
मुझको नहीं पता था,
कि मैया ऐसी होती है।।
क्या करूँ तारीफ उसकी,
शब्द नहीं मिल पाते हैं।
रखती है वो ख्याल हमारा,
वो मित्र हमारी होती है।।
अक्सर उसके होठों से,
सुरों की नदिया बहती है।
करूणामयी होती है मैया,
खुशियों की तिजोरी होती है।।
चाँद से प्यारी होती है,
सूरज से प्यारी होती है।
''जय'' को नहीं पता था,
कि मैया ऐसी होती है।

कर्म और किरदार

बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

खुशी-आनंद में झूमें सब, सतत-त्यौहार चाहिए,
जीवन हो सफल, ऐसा कर्म और किरदार चाहिए।।............1

महक जाए चमन सारा, पल भर में, पहुँचते ही,
स्वस्थ तन, मन, मधुर वाणी-कुशल श्रृंगार चाहिए।।...........2
खुशी-आनंद में...............किरदार चाहिए-

सहजता, सौम्यता से सुसज्जित व्यवहार हो अपना,
थोड़ा-सा प्यार भरा स्वीकार, और सत्कार चाहिए।।...........3
खुशी-आनंद में...............किरदार चाहिए-

मंजिल के रहगुज़र में साथ, साथी का पल-पल हो,
अटल संकल्पों पर निष्ठा, कदम दो-चार चाहिए।।............4
खुशी-आनंद में...............किरदार चाहिए-

संघर्षों से लड़ने का, साहस, अदम्य-अविचलित हो,
निज-अस्मिता की रक्षा को प्रतिकार, दमदार चाहिए।।.........5
खुशी-आनंद में...............किरदार चाहिए-

हमारा ही तुम्हारा हो, तुम्हारा भी हमारा हो,
दिव्य-ज्योति से आलोकित जगत-परिवार चाहिए।।............6
खुशी-आनंद में...............किरदार चाहिए-

उगते सूरज की प्रथम किरण

शुभम आनन्द रस्तोगी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
लखनऊ

उगते सूरज की प्रथम किरण, जिस वक़्त ज़मी पर पड़ती है,
मेघों में तड़पती वे बूंदे, जिस वक़्त धारा पर झड़ती है,
ऐसा ही दृश्य हो जाता है, मेरे विचित्र अंतरमन में,
जब सदियों की प्यासी आंखें, उसकी अंखियों से लड़ती हैं।

उगते सूरज की प्रथम किरण...

जिस तरह कभी निर्मल जल की, हर बूँद अमृत बन जाती है,
या इक पथिक को जिस तरह, पीपल की छांव सुहाती है,
ऐसी ही तृप्ति मेरे मन को, इक क्षण भर में मिल जाती है,
मुस्कान कभी उस चेहरे पर, जब मेरी वजह से आती है।

जिस तरह कभी निर्मल जल की....

जिस तरह बहारों की चाहत, भ्रमरे का जी मचलाती है,
फूलों के गहनों से जैसे, कुदरत खुद को सजाती है,
पर ऐसे खूब नज़ारों की सारी, इच्छा भर जाती है,
संमुख मेरी आंखों के जब, तस्वीर उसकी आ जाती है।

जिस तरह बहारों की चाहत...

जिस तरह गगन उड़ती चिड़िया कुदरत का लुत्फ उठाती ही,
बागो में बैठी कोयल जब, मनभावन राग सुनाती है,
ऐसे ही मुकम्मल जीवन की, आस या बढ़ जाती है,
मेरे जीवन के खालीपन को जब, यादें उसकी भर जाती हैं,

जिस तरह गगन उड़ती चिड़िया...

अदालत भी तुम्हारी है

कहने को तो खुशहाल है, खुदरंग है हम पर,
मेरे दिल में कुछ उलझन है, कुछ बेकरारी है,
मेरे हर ज़िक्र में तुम हो, तुम्ही शामिल हो आहों में,
मुझे ख्वाबों में जो दिखती है वो, सूरत तुम्हारी है...

खबर ये है हमारी कि हमें, अपनी खबर नहीं,
है छाइ होश पे हर वक़्त मेरे, तेरी खुमारी है,
ज़माने भर के ज़हन में मेरी, आँखों की चमक है,
पर मेरे चेहरे पे जो रौनक है, इनायत तुम्हारी है...

हा, दो पल बात तुमसे बैठ कर कभी कर ना पाए हम,
तुम्हारे लबों पे खामोशी की ये जो, पहरेदारी है,
कहो, क्या जिंदगी के सारे रास्ते, यूं ही तय होंगे,
अब इन रास्ते में अपनी भी कुछ, हिस्सेदारी है...

बिगड़ना लाख हम चाहे पर हम, बिगड़े भी तो कैसे,
नशा हमको तुम्हारा है, हमें आदत तुम्हारी है,
कि हर दिन मांगता हूं मैं दुआ में, तुमसे तुमको ही,
जो मैं दिन रात करता हूं वो, इबादत तुम्हारी है...

इस अधूरे प्यार के किसी को, मुक्म्मल करो जाना,
मेरा जीवन तुम्हारा है, मेरी चाहत तुम्हारी है,
सफर-ए-इश्क का मेरे आज तुम्ही फैसला कर दो,
ये मुजरिम भी तुम्हारा है, अदालत भी तुम्हारी है...

एक जीवन जिया

अर्शिका वर्मा
सुपुत्री श्रीमती रचना वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा,
लखनऊ

उन दिनों के लिए जो दुःख देते हैं और वे रातें जो दुःख लाती हैं
मैंने हमेशा खुद को दहलीज पर पाया है
कभी कहीं का नहीं
कभी समझदार नहीं
शिशु से बचपन तक, किशोरावस्था से जवानी तक
मुझे पता था कि कुछ गायब था
और ऐसा नहीं था कि मुझे पता नहीं था कि यह क्या है
ऐसा भी नहीं था कि मैं इसके बारे में अस्पष्ट रूप से जानती थी
मैं पूरी तरह से और सटीक रूप से जानती थी, हर समय, यह क्या थी
और यही समस्या थी
वे ऐसे ही नहीं कहते कि अज्ञान आनंद है
मैं इसे कठिन तरीके से जानती हूं, कि यह है
लेकिन मुझे अब एहसास हुआ है कि समस्या को जानना समस्या नहीं थी
इसे ठीक न कर पाना समस्या थी
मैंने सौ चीजें आजमाईं, मैंने सौ बार कोशिश की
कुछ काम नहीं आया
यह दुःख मेरे साथ रहेगा, जैसे मैं इसके साथ रही हूँ
मुझे कुछ भी सूट नहीं करता, वे कहते हैं, मोती भी नहीं
हो सकता है किसी दिन समाज मुझे माफ कर दे
मैं एक सांवली लड़की हूं, यह मेरी गलती नहीं।

हिंदी मेरी भाषा है

समृद्धि कनोडिया
सुपुत्री श्री प्रवीन कनोडिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)
उ.प्र., लखनऊ

हिंदी मेरी भाषा है, हिंदी मेरी आशा है।
हिंदी मुझको प्यारी है, हिंदी राजदुलारी है।।
हिंदी मेरी भाषा है, हिंदी मेरी आशा है।।।

भारत की है प्यारी हिंदी, भारत की फुलवारी हिंदी।
बोले जनता सारी हिंदी, हर यश की अधिकारी हिंदी।।
हिंदी मेरी भाषा है, हिंदी मेरी आशा है।।।

तमिल, तेलगू, मलयालम, हिंदी है सबकी हरदम।
उड़िया, उर्दू, या सिंधी, सबका गौरव है हिंदी।।
हिंदी मेरी भाषा है, हिंदी मेरी आशा है।।।

सबसे प्रेम बढ़ाती हिंदी, सबको राह दिखाती हिंदी।
सबको शीश झुकाती हिंदी, सबको एक बनाती हिंदी।।
हिंदी मेरी भाषा है, हिंदी मेरी आशा है।।।

वाह री परीक्षा

श्रीमती पुष्पा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)
उ.प्र., लखनऊ

वाह री परीक्षा
लिखो तो मुश्किल, ना लिखो तो मुश्किल।
नंबर मिले या ना मिले कॉपी तो भरनी ही पड़ेगी।।

कैसा गया पेपर
अच्छा कहो तो मुश्किल, ख़राब कहो तो मुश्किल।
अच्छा कहो तो प्रथम आना
फेल हो तो मुश्किल, पास हो तो मुश्किल।।

फेल हो तो फिर किताब चाटो,
पास हो तो फिर किताब की लिस्ट ताको।
तौबा रे यहाँ कैसी पढ़ाई,
पढ़ो तो मुश्किल ना पढ़ो तो मुश्किल।।

कविता

जान्हवी वर्मा
भांजी सुश्री छाया रानी श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(केंद्रीय व्यय) शाखा कार्यालय प्रयागराज
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

एक ने धैर्य रखने को कहा तो, दूजे ने शब्द नाद करने को।
(एक नौका बन मैं निर्झरणी में बहे हुए, अकस्मात ही मदद मांगते हुए।)

एक ने मन पखेरू बन उड़ने को कहा, तो दूजे ने गौ बन धरा से जुड़ने को।
(बहते प्रवाह से लड़, ढूंढ़ती हूं मैं अपना लक्ष्य।)

एक ने गतिमय होने को कहा तो, तो दूजे ने समय से बंध कर।
(आह ! मेरी नौका न पहुंच पाए, अपने साहिल को।)

खुद को समाने के लिए, ऐ बता ... मैं क्या करूं ?
खुद को यूं ढालने के लिए, ऐ बता ... मैं क्या करूं ?

यह जगत मांगे है ज्ञान त्याग निर्वाण का ?
ऐ बता, जगत में आकर स्वीकार इसे मैं कैसे करूं ?

इतराता हूँ

रामौतार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
पटना शाखा कार्यालय
कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

इतराता हूँ
अपनी जन्मभूमि पर
इतराता हूँ
अपनी मां पर
इतराता हूँ
देश पर
इतराता हूँ
अपने गुरूओं पर
इतराता हूँ
संकटकालिन में मददकर्ता पर
इतराता हूँ
अपने संतान पर
इतराता हूँ
अपने सच्चे दोस्त पर
इतराता हूँ
देश के रक्षकों पर
देश को सुरक्षित रखते हैं
तब हम खुशी से रहते हैं
इसलिए इतराता हूँ
वैसे महान जवानों पर

हमारा कार्यालय भी महान है
देश की आर्थिक रक्षा करना
कार्यालय का काम है
हर पहलू पर जांचता हूं
समझाता हूँ, बताता हूँ
रक्षक बनकर आर्थिक प्रहरी
बनता हूँ
इसलिए इतराता हूँ
अपने कार्यालय पर
गौरांवित महसूस करता हूँ
महालेखाकार कार्यालय पर
सीना चौड़ा कर कहता हूं
हम सेवानिवृत हूऐ
ऐसे पावन कार्यालय से
किसे आर्थिक रक्षा करना काम है
ऐसे कार्यालय को कोटिशः प्रणाम है
इतराता हूँ इसीलिए
अपने आप पर
इतराता हूँ
अपने तिरंगे पर

जय हिंद

अनमोल-रिश्ते

गुरू ज्ञान, है अनमोल।
संचित रखे, इनके बोल।।
बोल, काम आऐगें रोज।
बोल, जय गुरूदेव की रोज।।

माता-पिता, है अनमोल।
इनके मीठे-मीठे बोल।।
देते आशीष वचन, रोज।
पूजा करें, इनकी रोज।।

ईश-कृपा, है अनमोल।
जय महाकाल की बोल।।
मार्ग-दर्शन, करते रोज।
स्तुति करें, इनकी रोज।।

सच्चा दोस्त, है अनमोल।
कभी न बोले, कटु बोल।।
रखें इनसे, मधुर सम्बन्ध रोज।
रहेगा जीवन आनदंमय, रोज।।

बदली सी

राजेश कुमार-1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ

घन घन घटा थी, श्वेत चादर साथ थी
वो बदली भी अजीब थी,
मनमोहक थी,
मनभावुक थी,
वो संकेतक थी,
एक परिकल्पना थी।।
घन घन घटा थी, श्वेत चादर साथ थी।

नयनाभिराम थी,
सौंदर्य की छटा थी,
वो रिमझिम थी,
छन छन ध्वनि थी।।
घन घन घटा थी, श्वेत चादर साथ थी।

वो कर्णप्रिय थी,
तानसेन की सुर थी,
वो मधुर मिलन से, रोमांचित थी।।
घन घन घटा थी, श्वेत चादर साथ थी।

खामोशी

सुमन केशरी
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
प्रयागराज

आंखो ही आंखो में कुछ,
इशारे होने दो।
मौन शब्द होठो में,
जो बात है दिलों में।
एहसास प्यार का होने दो,
खामोशी को कहने दो।
चाँदनी रात सुहानी,
मदभरी हवा हो गाने दो।
दो दिल मिल रहे हैं,
सांसो में सांसें घुल रही हैं।
पल सा इन्हे थमने दो,
खामोशी को कुछ कहने दो।

होठो को छूकर हल्के से,
प्यार की प्यास बुझने दो।
हाथों में हाथ रेशम सा,
स्पर्श मंदिर मधुर सा।
एक दूसरे में खो जाने दो,
कुछ न कहो आज।
बस खामोशी को कहने दो।
कुछ न कहो आज,
केवल खामोशी को कहने दो।

मन की बात

डॉ. आकांक्षा उपाध्याय
पत्नी अभिषेक उपाध्याय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा
लखनऊ

मन मेरा मन से, मन की बाते करता है,
कैसे कहूँ किसी से, मन मेरा डरता है।
होता उपद्रव कहीं, लहू कहीं बहता है,
कहीं आशाएं टूटीं, मान कहीं ढहता है।।

जनक ने जननी को, ये कैसा उपहार दिया,
जन्म पूर्व ही उसने, जानकी को मार दिया।
जड़मति ने जीवन की, जड़ में प्रहार किया,
उसी वृक्ष पर बैठकर, उसी का संहार किया।।

कहीं अपनी अस्मिता की, वो मांग रही भीख,
बचाओ इन देह पिशाचों से, दहाड़ रही चीख।
ये कैसी राह चला मनुष्य, ये कौन सी लीख,
सकल मानव मन मलिन, अब पशुओं से सीख।।

आग की उन लपटों में, बहू एक कराह रही,
अब तक थी चुप अब, कहना कुछ चाह रही।
पापों की कलियुग में, कहाँ कब थाह रही,
दिया सर्वस्व पर तुमको, पैसो की चाह रही।।

वृद्धाश्रम के झरोखे से, खड़ी निहारे ममता,
क्यों भूल गए नमता, बिना विचारे समता।
अब नहीं रही क्षमता, कि दर्द नहीं थमता,
ये दर्द नहीं थमता, अब हृदय नहीं रमता।।

जहाँ बिन सीता राम नहीं, राधा बिन श्याम नहीं,
जहाँ बिन तुलसी धाम नहीं, देवी बिन ग्राम नहीं।
जहाँ बिन सरस्वती ज्ञान नहीं, गायत्री बिन ध्यान नहीं,
अचरज वहीं स्त्री का मान नहीं, जननी का सम्मान नहीं।।

जाने कुछ शार्ट-कट्स [Let's have some Keys]

अभिषेक उपाध्याय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

तकनीकी वरदान या अभिशाप, इस शीर्षक पर अनंतकाल से ही निष्कर्ष रहित चर्चा चली आ रही हैं और संभवतः आगे भी चलती रहे। किन्तु एक बात पर लगभग सभी की सहमति बन ही जाती है कि तकनीकी के अभिभूत विकसित डिजिटिकरण ने सरकारी या गैर सरकारी कार्यालयों में कंप्यूटर के प्रयोग एवं निर्भरता को काफी हद तक बढ़ा दी हैं। डिजिटिकरण के इस दौर में कामकाजी पेशेवर के लिए कार्य का समय पर निष्पादन, सही तकनीकी का प्रयोग, शार्ट कट का ज्ञान एवं सही जगह पर उनका प्रयोग महत्वपूर्ण हो गया है। केंद्र या राज्य के अधीन कार्यालयों में अधिकतर विंडोस ऑपरेटिंग सिस्टम का ही प्रयोग होता है, अब अगर हमें विंडोस शार्ट कट की सही जानकारी हो तो हम किसी कार्य को सम्पादित करने में लगने वाले समय को काफी हद तक कम कर उसके समय पर निष्पादन को सुनिश्चित कर सकते हैं। तो चलिये जानते है विंडोस (Windows 11) में उपयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण शार्ट कट के बारे में और बचाते है अपना समय;

Short Key	Function	Short Key	Function	Short Key	Function
Windows logo key + A	Open Quick Settings	Windows logo key + N	Open notification center and calendar	Windows logo key + Tab	Maximize the window.
Windows logo key + C	Open Chat from Microsoft Teams.	Windows logo key + O	Lock device orientation.	Windows logo key + Alt + Up arrow	Snap window in focus to top half of screen
Windows logo key + D	Display and hide the desktop	Windows logo key + P	Choose a presentation display mode	Windows logo key + Down arrow	Remove current app from screen or minimize the desktop window
Windows logo key + E	Open File Explorer.	Windows logo key + Ctrl + Q	Open Quick Assist.	Windows logo key + Left arrow	Maximize the app or desktop window to the left side of the screen
Windows logo key + H	Launch voice typing	Windows logo key + R	Open the Run dialog box	Windows logo key + Right arrow	Maximize the app or desktop window to the right side of the screen
Windows logo key + I	Open Settings	Windows logo key + Alt + R	Record video of screen (Recorded video can be seen by pressing Window key + G)	Windows logo key + Shift + Spacebar	Cycle backwards through language and keyboard layout
Windows logo key + K	Open Cast from Quick Settings	Windows logo key + Shift + S	Take a screenshot of part of your screen.	Windows logo key + Spacebar	Switch input language and keyboard layout.
Windows logo key + L	Lock your PC or switch accounts.	Windows logo key + U	Open Accessibility Settings	Windows logo key + Ctrl + Enter	Turn on Narrator
Windows logo key + M	Minimize all windows	Windows logo key + W	Open Widgets	Windows logo key + PrtScn	Save full screen screenshot to file.
Windows logo key + Shift + M	Restore minimized windows on the desktop	Windows logo key + comma (,)	Temporarily peek at the desktop	Windows logo key + Alt + PrtScn	save screenshot of window in focus to file

ग्लोबलवार्मिंगः मानव जीवन के लिए चुनौती

योगेन्द्र नारायण बाजपेयी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
शाखा प्रयागराज
कार्यालय प्रधान निदेशक (केन्द्रीय)
लखनऊ

ग्लोबलवार्मिंग धरती के लिए एक बड़ा खतरा बनता जा रहा है। भारत के सन्दर्भ में भी वह विशेष चिंता का विषय बन गया है। उदाहरण के लिये भारत के उत्तरी राज्यों में पिछले साल गर्मी के मौसम में न विशेष गर्मी पड़ी न लू चली। लगातार आंधी तूफान बारिश से मौसम ठंडा रहा। जून माह के अंतिम सप्ताह से भीषण उमस वाली असहनीय गर्मी शुरु हुई जो लगभग दो माह चली। इस वर्ष जाड़ा भीषण पड़ा जो मार्च के अंतिम सप्ताह तक चला और फिर अचानक तेज गर्मी शुरू हो गई। वसंत ऋतु आई ही नहीं। वर्षा ऋतु में भी कुछ हिस्सों में भीषण अतिवृष्टि हो रही है तो कुछ हिस्सों में सूखे की हालत है। शेष विश्व में भी ऋतुओं का व्यवहार असामान्य ही रहा है।

ग्लोबलवार्मिंग हर साल नये तरीके से अपने दुष्परिणाम दिखा रही है। दुनिया की सरकारों को इस संबंध में जो करना चाहिए वे नहीं कर रहीं या कर भी रही हैं तो वह अपर्याप्त है। ग्लोबलवार्मिंग को सिर्फ सरकारों के बल पर रोकना संभव भी नहीं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता को एक आंदोलन का रूप देना होगा। व्यक्तिगत स्तर पर सामान्यजन को प्रयास करने होंगे, जैसे :-

1. एक परिवार में जितने बच्चे हों, कम से कम उतने पेड़ लगाएं और बच्चों के साथ उन्हें भी बड़ा करें तो पर्यावरण संरक्षण को एक आन्दोलन का रूप दिया जा सकता है।

2. मांसाहार छोड़ कर पूर्ण शाकाहार अपनाना होगा। दुनिया में जितना मांसाहार बढ़ता है उतने जंगल कटते हैं क्योंकि मांस के लिए पाले जाने वाले जानवरों के चारे के लिए भूमि की आवश्यकता बढ़ती जाती है। अमेजोन सहित दुनियाभर के जंगलों में भीषण आग की लगातार बढ़ती घटनाएँ सिर्फ प्राकृतिक नहीं हैं। यह जंगल साफ कर कृषि और चरागाह के लिए अधिक भूमि प्राप्त करने से संबंधित है।

3. शराब पीना एक फैशन हो गया है और लगातार बढ़ता जा रहा है। खाद्यान्न जो करोड़ों लोगों का पेट भर सकते थे उन्हें सड़ा कर शराब बनाई जा रही है। अतिरिक्त अन्न उपजाने और फिर उससे शराब बनाने की प्रकिया में अत्यधिक संसाधन और ऊर्जा नष्ट होती है और अंततः यह धरती के ताप को ही बढ़ाती है। इसलिए मदिरापान बिल्कुल छोड़ देना चाहिए, यह किसी के भी हित में नहीं है।

4. बिजली के लिए सोलर पैनल लगवाना चाहिए। सौर ऊर्जा में एक बार निवेश किया जाए तो यह लंबे समय तक आपको आर्थिक लाभ देता है और साथ ही तापीय विद्युत के लिए जलने वाले लाखों टन कोयले को बचाता है।

5. और अंत में यह ध्यान रखना जरूरी है कि जीवन अंधाधुंध उपभोग के लिए नहीं है। चीजें उतनी ही खरीदना चाहिए जितनी आवश्यक है। किसी के द्वारा एक शर्ट या जूता भी अनावश्यक खरीदना अंततः पर्यावरण पर बोझ बनता है और सब्जी लेने साइकिल से जाना पेट्रोल बचाता है जो अंततः पर्यावरण को राहत देता है।

ब्रम्हांड में अरबों खरबों ग्रह हैं और अनेकों में जीवन भी जरूर होगा लेकिन फिलहाल हमारे पास कोई अन्य विकल्प नहीं है इसलिए धरती के पर्यावरण को बचाए रखना है। इसमें धरती का नहीं हमारा हित है क्योंकि मानव के समाप्त होने के बाद धरती अपने पर्यावरण को बहुत कम समय में स्वयं ठीक कर लेगी ऐसा विशेषज्ञ कहते हैं। मनुष्य को यह समझना चाहिए कि यह धरती जितनी उसकी है उतनी ही किसी मछली सर्प गिद्ध या भेड़ की भी है। अस्तित्व के लिए वह किसी कीट पतंगे या घास से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। मनुष्य का मस्तिष्क कुछ अधिक विकसित हो जाने से उसे अन्य जीवों का उपभोग या शोषण करने का अधिकार नहीं मिल जाता। समय रहते उसे चेत जाना चाहिए अन्यथा प्रकृति उसे नष्ट करने में जरा भी संकोच नहीं करेगी क्योंकि वह धरती और इसके प्राणी जगत के लिए खतरा बन चुका है।

क्या आप जानते हैं

दुनिया की सबसे छोटी महिला का रिकॉर्ड नागपुर की रहने वाली 23 वर्षीय ज्योति आम्गे के नाम है। इनकी ऊंचाई केवल 2 फ़ीट 6 इंच अर्थात 62.8 सेंटीमीटर है।

पूर्व में यह रिकॉर्ड इनके नाम 'टाइनीएस्ट टीनेजर' के रूप में भी रह चुका है। यह अमेरिका के एक हॉरर स्टोरी शो में भी काम कर चुकी हैं।

सेवानिवृत्तियां - जुलाई 2021 से दिसंबर 2022 के मध्य

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की प्रभावी तिथि
1.	सुशील कुमार श्रीवास्तव	निदेशक	31-01-2022

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की प्रभावी तिथि
1.	धर्मेन्द्र बहादुर सिंह	लिपिक	31-08-2021
2.	राजेंद्र कुमार वर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-10-2021
3.	सुनील कुमार अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30-04-2022
4.	निरुपमा श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31-08-2022
5.	आलोक कुमार	एम.टी.एस.	31-10-2022

वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, गोमतीनगर, लखनऊ

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की प्रभावी तिथि
1.	सीताराम धूरिया	वरिष्ठ लेखा परीक्षक	31-07-2021
2.	अनिल कुमार गुप्ता	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-06-2022
3.	धीरेन्द्र किशोर	सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	31-07-2022
4.	महिपाल	पर्यवेक्षक	31-07-2022
5.	ज्ञान शंकर दीक्षित	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-09-2022

पदोन्नतियाँ - जुलाई 2021 से दिसंबर 2022 के मध्य

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	पदोन्नति की प्रभावी तिथि
1.	प्रीती श्रीवास्तव	वरिष्ठ निजी सचिव	02-08-2021
2.	पंकज मौर्या	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	09-12-2021
3.	ओम पाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	13-06-2022
4.	अनादि शुक्ला	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	01-08-2022
5.	नीतिश कनोडिया	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	01-12-2022
6.	आकाश तिवारी	लेखापरीक्षक	28-04-2022
7.	विजय कुमार	लेखापरीक्षक	28-04-2022
8.	रवि सिंह	लेखापरीक्षक	28-04-2022
9.	बृजेश भारती	लेखापरीक्षक	19-09-2022

वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, गोमतीनगर, लखनऊ

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	पदोन्नति की प्रभावी तिथि
1.	मो. इमरान खान	सहायक पर्यवेक्षक पद से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी पद पर पदोन्नत्ति	04-02-2022
2.	ध्रुवनाथ तिवारी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक पद से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी पद पर पदोन्नत्ति	04-02-2022
3.	आकाश गौतम	वरिष्ठ लेखापरीक्षक पद से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी पद पर पदोन्नत्ति	04-02-2022
4.	संजीव सिन्हा	लिपिक पद से लेखापरीक्षक पद पर पदोन्नत्ति	30-03-2022
5.	राहुल कात्यान	आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक से लेखापरीक्षक पद पर पदोन्नत्ति	24-08-2022
		लेखापरीक्षक से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी पद पर पदोन्नत्ति	18-10-2022
6.	निरंजन कुमार	लिपिक पद से लेखापरीक्षक पद पर पदोन्नत्ति	24-08-2022

संधान चतुर्थ अंक के विमोचन की झलकियाँ (03.01.2022)

संधान चतुर्थ अंक के विमोचन की झलकियाँ (03.01.2022)

15 अगस्त 2022 की कुछ झलकियाँ

15 अगस्त 2022 की कुछ झलकियाँ

15 अगस्त 2022 की कुछ झलकियाँ

15 अगस्त 2022 की कुछ झलकियाँ

उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (रिपोर्ट केन्द्रीय) श्री राकेश मोहन के लखनऊ आगमन की झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह 17.11.2022 - 23.11.2022 के अवसर की झलकियाँ

ऑडिट भवन परिसर स्थित विभिन्न भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा कार्यालयों द्वारा 17-11-2022 से 23-11-2022 तक ऑडिट सप्ताह मनाया गया। ऑडिट सप्ताह के दौरान रंगोली, निबंध, प्रश्नोत्तरी एवं चुनिन्दा विषयों पर पावेर पॉइंट प्रेजेंटेशन आयोजित किये गए। कुछ झलकियाँ:

ऑडिट सप्ताह 17.11.2022 - 23.11.2022 के अवसर की झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह 17.11.2022 - 23.11.2022 के अवसर की झलकियाँ

सुश्री आभा काला, प्रधान आयकर आयुक्त (कर निर्धारण इकाई-फेस लेस का स्वागत

श्री पंकज कुमार, प्रबंध निदेशक उत्तर प्रदेश पॉवर कॉरपोरेशन लिमिटेड का स्वागत

सुश्री आरती सक्सेना, आयुक्त सीमा शुल्क (निवारक) लखनऊ का स्वागत

श्री संजय कुमार प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का संबोधन

ऑडिट सप्ताह 17.11.2022 - 23.11.2022 के अवसर की झलकियाँ

सुश्री तान्या सिंह महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का संबोधन

ऑडिट सप्ताह 17.11.2022 - 23.11.2022 के अवसर की झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह 17.11.2022 - 23.11.2022 के अवसर की झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह 17.11.2022 - 23.11.2022 के अवसर की झलकियाँ

श्रद्धा सुमन

अखिलेश दुबे
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
20.06.1984 - 31.01.2022

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग उसे जला सकती है। न पानी उसे भिगो सकता है, न हवा उसे सुखा सकती है।

मृत्यु जीवन का अंतिम एवं अवश्यम्भावी सत्य है। हम सब इसे जानते हैं तथापि किसी की भी अकाल मृत्यु सभी सम्बन्धियों, मित्रों के लिए अत्यन्य कष्टकारक है। संधान परिवार के श्री अखिलेश दुबे की असामयिक मृत्यु अत्यंत कष्टप्रद है। श्री अखिलेश दुबे कार्यालय महालेखाकार उत्तर प्रदेश द्वितीय में वरिष्ठ लेखा परीक्षक के पद पर कार्यरत थे। इन्होंने दिसंबर 2012 में भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग के दिल्ली स्थित कार्यालय में अपनी नौकरी की शुरुआत की थी। कालांतर में मार्च 2018 में स्थानान्तरित होकर कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखा परीक्षा प्रथम प्रयागराज आ गए एवं अप्रैल 2018 में लखनऊ कार्यालय में कार्यभार ग्रहण किया। गंभीर बीमारी के चलते 31 जनवरी 2022 को श्री अखिलेश दुबे का देहावसान हो गया। संधान परिवार की ईश्वर से प्रार्थना है की ब्रह्मलीन आत्मा को शांति एवं उनके परिजनों को दुःख सहन करने की शक्ति दे।

ज़िंदगी है अपने क़ब्ज़े में न अपने बस में मौत
आदमी मजबूर है और किस क़दर मजबूर है

(अहमद आमेठवी)

आधुनिक लखनऊ

अटल बिहारी वाजपेयी (इकाना) स्टेडियम, लखनऊ

गोमती रीवर फ्रंट, लखनऊ

अवधी लखनऊ

रेलवे स्टेशन चारबाग, लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

army printing press
www.armyprintingpress.com
Lucknow (0522) 6565333

राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान - पंचम अंक (जुलाई 2021-दिसम्बर 2022)